सफ़लता की कहानियां

राजस्थान स्कूल नेतृत्व अकादमी, (आरएसएलए), जयपुर

राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान (सीमेट), राजस्थान

एक सवाल जिसने बदल दी विद्यालय की तस्वीर

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, चनानी जिला टोंक में जब प्रधानाध्यापिका श्रीमती सरिका सिंह ने अक्टूबर 2022 में कार्यभार संभाला, तब विद्यालय में कंप्यूटर शिक्षा लगभग अस्तित्वहीन थी। न तो कोई कंप्यूटर लैब थी और न ही बिजली की सुव्यवस्थित व्यवस्था। पूर्व में उपलब्ध कंप्यूटर शॉर्ट सर्किट से क्षतिग्रस्त हो चुके थे, जिससे व्यवस्था अव्यवस्थित थी और पुराने कंप्यूटर पहले ही शॉर्ट सर्किट से क्षतिग्रस्त हो चुके थे। Basic Computer Instructor (BCI) और शिक्षक हतोत्साहित थे। विद्यार्थियों में डिजिटल शिक्षा को लेकर उत्सुकता थी, पर संसाधनों के अभाव में अवसर नहीं मिल पा रहा था। कार्यग्रहण के कुछ ही समय बाद कुछ विद्यार्थियों द्वारा पूछा गया प्रश्न "मैम, हमारे स्कूल में कंप्यूटर क्लास कब शुरू होगी?" उनके लिए प्रेरणा बन गया। उन्होंने दृढ़ संकल्प लिया कि सीमित संसाधनों के बावजूद विद्यार्थियों को डिजिटल साक्षरता से वंचित नहीं रखा जाएगा।

प्रधानाध्यापिका ने शिक्षकों, विद्यार्थियों और SDMC सदस्यों के साथ मिलकर एक व्यावहारिक योजना तैयार की। विद्यालय की एक कक्षा को ICT लैब में बदला गया, पुराने फर्नीचर की मरम्मत करवाई गई तथा सुरक्षित बिजली वायरिंग और सॉकेट की व्यवस्था की गई। इसके साथ ही उन्होंने स्थानीय उद्योगों से संपर्क कर CSR सहयोग की दिशा में प्रयास किए, जिसके परिणामस्वरूप Dabur India Ltd. द्वारा CSR फंड के अंतर्गत विद्यालय को 10 नए कंप्यूटर प्राप्त हुए। बिजली की अनियमितता को ध्यान में रखते हुए SDMC के सहयोग से इनवर्टर भी लगाया गया, जिससे कंप्यूटर कक्षाएँ नियमित रूप से संचालित हो सकीं।

इस पहल में विद्यालय स्टाफ और अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी रही। किसी ने परदे सिलवाए, किसी ने कंप्यूटर कवर बनवाए और किसी ने श्रमदान किया। धीरे-धीरे एक पूर्णतः सुसज्जित ICT लैब तैयार हुई। आज कक्षा 6 से 10 तक के विद्यार्थी बड़े उत्साह से कंप्यूटर शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। BCI श्री पुरुषोत्तम श्रीवास्तव और शिक्षक मिलकर बच्चों को डिजिटल कौशल सिखा रहे हैं। विद्यार्थी स्वयं लैब की स्वच्छता और उपकरणों की देखरेख करते हैं। इस परिवर्तन ने विद्यालय को नई पहचान दी है और यह सिद्ध किया है कि दूरदृष्टि, नेतृत्व और सामूहिक प्रयास से किसी भी विद्यालय में सकारात्मक बदलाव संभव है।